विभागीय गृह पत्रिका

सीमा भारती

SEEMA BHARATI

वर्ष : 2021-2022 अंक 27

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सीमा शुल्क आयुक्तालय अंचल –I

नवीन सीमा शुल्क भवन, बैलार्ड पियर, मुंबई – ४०० ००१.

Commissionerate of Customs Zone - I

New Customs House, Ballard Pier, Mumbai - 400 001.

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित समारोह की झलकियाँ

दीप प्रज्वलित करते हुए

शुभकामना संदेश

संरक्षक की कलम से ....

यह अति प्रसन्नता का विषय है कि मुंबई सीमाशुल्क अंचल- । विभागीय हिन्दी पत्रिका 'सीमाभारती' के 27 वें अंक का प्रकाशन कर रहा है । राजस्व कर संग्रहण जैसे महत्वपूर्ण किन्तु नीरस एवं तस्करीरोधी जैसे गंभीर और संवेदनशील कार्यों के निष्पादन के मध्य विभागीय प्रतिभाओं और उपलब्धियों के प्रदर्शन को समाहित करती हुई हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है ।

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है और यही इसकी विशेषता भी है । केंद्रीय सरकारी कार्यालयों विशेषकर मुंबई स्थित कार्यालयों में हमें सम्पूर्ण भारत के विविध भाषाभाषी अधिकारियों के साथ कार्य करने का अवसर मिलता है, ऐसे में किसी एक स्थान पर सभी को पत्रिका के माध्यम से एक सूत्र में पिरोना भी अत्यन्त सराहनीय एवं प्रशंसनीय है ।

मुझे विश्वास है कि 'सीमाभारती' राजभाषा के प्रचार - प्रसार के साथ विभागीय अभिरुचियों और उपलब्धियों को पर्याप्त स्थान देते हुए पत्रिका प्रकाशन की गौरवमयी परंपरा को सतत् बनाए रखेगी । मैं इस प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों और रचनाकारों को अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ ।

प्रमोद कुमार अग्रवाल
मुख्य आयुक्त
सीमाशुल्क, मुंबई अंचल - ।

शुभकामना संदेश

प्रधान संपादक की कलम से .....

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में प्रधान आयुक्तालय सीमाशुल्क (सामान्य) का विगत लम्बे समय से उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा है और इसी के परिणाम स्वरुप नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंम्बई द्वारा राजभाषा नीति अनुपालन के लिए वर्ष 2018 मे पुरस्कार भी प्राप्त कर चुका है ।

विभागीय उपलब्धियों को दर्शाने के लिए विभिन्न तकनीकी मंच उपलब्ध है, किन्तु मुंबई सीमाशुल्क अंचल - । इस प्रयोजन हेतु अपने विभागीय प्रकाशन ''सीमाभारती'' के 27 वे अंक का सफलतापूर्वक प्रकाशन कर रहा है ।

महाराष्ट्र राज्य की स्थानीय भाषा मराठी होने और इसकी लिपि देवनागरी होने के कारण मुंबई कार्यालय के अधिकतम अधिकारी / कर्मचारी राजभाषा हिन्दी का संतोषजनक ज्ञान रखते हैं और उनकी ये विशेषता राजभाषा से जुड़े सभी कार्यों के सुचारु रूप से क्रियान्वयन में सहायक सिध्द होती है । पत्रिका के प्रकाशन के प्रति उनकी कर्तव्यनिष्ठता और उत्साह भी अत्यंत सराहनीय है ।

मैं पत्रिका प्रकाशन के इस अथक प्रयास के लिए संपादक मण्डल एवं अपना उत्कृष्ट योगदान प्रदान करने वाले समस्त रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाऐं देता हूँ।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि ''सीमाभारती'' का यह अंक पूरे सीमाशुल्क परिवार के लिए अत्यंत रोचक, संग्रहणीय एवं प्रेरणास्पद सिध्द होगा ।

सुनील जैन

सुनील जैन
प्रधान आयुक्त, सीमाशुल्क (सामान्य)
सीमाशुल्क, मुंबई अंचल - ।

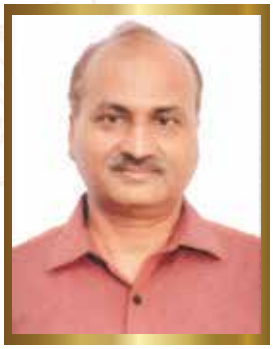

शुभकामना संदेश

सीमाशुल्क मुंबई की विभागीय गृह पत्रिका 'सीमा-भारती' के 27 वें अंक के आसन्न प्रकाशन हेतु मुख्य आयुक्त कार्यालय व संपादक-मण्डल को हार्दिक व असीम बधाई । इस पत्रिका में विभाग के कई अधिकारियों ने निबंध, लेख तथा कविता के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किये हैं । इन सभी अधिकारियों को मेरी तरफ से धन्यवाद । इस पत्रिका का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्यवहार को और आगे बढ़ाना तथा अधिकारियों के विचारों को सबके सामने प्रस्तुत करना है । मुझे आशा है कि यह पत्रिका इन उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल रहेगी । इसी प्रकार साहित्य द्वारा ''सीमा-भारती'' के निर्बाध प्रकाशन को विभाग सुचारू कर सके इस हेतु मेरी शुभकामनाएं ।

मनोज

मनोज कुमार केडिया
आयुक्त, सीमाशुल्क आयात - I व II
सीमाशुल्क, मुंबई अंचल - I

शुभकामना संदेश

प्रबंध संपादक की कलम से .....

मुंबई सीमाशुल्क अंचल - I, सीमाशुल्क अधिकारियों के व्यक्तित्व एवं प्रशासनिक संचालन हेतु एक महत्वपूर्ण संगठन है। यहाँ प्रशासनिक के साथ-साथ तकनीकी संबंधी कार्य भी सम्पन्न किए जाते हैं। प्रशासनिक कार्यों में राजभाषा हिन्दी का निरंतर विस्तार संतोष का विषय है। राजभाषा क्रियान्वयन के अतिरिक्त कार्यालय द्वारा अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का भी आयोजन यहाँ किया जाता है, जैसे हिन्दी कवि सम्मेलन, विभागीय कवियों द्वारा काव्यपाठ व विभिन्न प्रतियोगितायें एवं हिन्दी कार्यशालाएँ, राजभाषा के विस्तार में सहायक सिध्द हुई हैं। निश्चय ही ये गतिविधियां हिन्दी के प्रचार - प्रसार में महती भूमिका निभा रही हैं एवं ऐसा प्रयास सराहनीय है।

इन प्रयासों में हम सभी को सक्रिय योगदान देना चाहिए और अपने कार्यों को अधिक से अधिक हिन्दी में करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसी भावना रखकर ही हम एक सच्चे एवं जनाभिमुख लोक प्रशासन की नींव रख सकेंगे।

अंत में, मैं पत्रिका के प्रकाशन के इस सराहनीय प्रयास के लिए संपादक मण्डल एवं सभी रचनाकारों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से 'सीमाभारती' के 27 वें अंक को प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आशा है, इसे पढ़कर आप अपने बहुमूल्य सुझावों से अवगत कराएंगे जिससे आगामी अंक को और सरस, सुरुचिपूर्ण एवं सारगर्भित बनाया जा सके।

तारिक माबूद
अपर आयुक्त, सीमाशुल्क (सामान्य)
सीमाशुल्क, मुंबई अंचल - I

शुभकामना संदेश

संपादकीय ...

सीमाशुल्क अंचल - I की विभागीय गृह पत्रिका 'सीमाभारती' के 27 वे अंक का प्रकाशन करते हुए मुझे खुशी हो रही है कि 'सीमाभारती' पत्रिका के प्रकाशन की जिम्मेदारी मेरे लिए सुखद रही। हमारे सभी रचनाकारों एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने रुचि लेकर पत्रिका को आप तक पहुंचाने में सहयोग दिया। पत्रिका का प्रत्येक रचनाकार या लेखक अपने आप में एक पहचान है। उनकी मौलिकता उनकी रचनाओं में झलकती है। पत्रिका के प्रकाशन में आप सभी का सहयोग निरंतर मिलता रहा है और आशा करती हूँ कि आगे भी मिलता रहेगा। सभी रचनाकारों एवं हिंदी अनुभाग के मेरे सहयोगी मोहम्मद इकबाल, आशुलिपिक जिन्होंने 'सीमाभारती' पत्रिका के प्रकाशन में विशेष सहयोग दिया है, मैं उनके प्रति विशेष आभार प्रकट करती हूँ। इस संदर्भ में सहायक आयुक्त (हिंदी अनुभाग), श्री. अनिल कुमार एवं श्री. संजय कुमार एस. बुन्देला द्वारा समय-समय पर महत्वपूर्ण एवं सम्यक् दिशा-निर्देश प्राप्त होते रहे हैं।

सादर।

जागृति एच. जोशी
सहायक निदेशक (राजभाषा)
सीमाशुल्क, मुंबई अंचल - I

अंक : २७
विभागीय हिंदी गृह पत्रिका
वर्ष : २०२१-२०२२

संरक्षक
प्रमोद कुमार अग्रवाल
मुख्य आयुक्त

प्रधान संपादक
सुनील जैन
प्रधान आयुक्त

प्रबंध संपादक
तारिक माबूद
अपर आयुक्त

संपादक मंडल
अनिल कुमार
सहायक आयुक्त

जागृति एच. जोशी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

मोहम्मद इकबाल
आशुलिपिक

अनुक्रमणिका

क्र	विषय	लेखक का नाम/ पदनाम	पृष्ठ
1	संरक्षक की कलम से	प्रमोद कुमार अग्रवाल, मुख्य आयुक्त	i
2	प्रधान संपादक की कलम से	सुनील जैन, प्रधान आयुक्त	ii
3	प्रधान संपादक की कलम से	मनोज कुमार केडिया, आयुक्त	iii
4	प्रबंध संपादक की कलम से	तारिक माबूद, अपर आयुक्त	iv
5	संपादक की कलम से	जागृति एच. जोशी, सहायक निदेशक (राजभाषा)	v
6	वड़ाला स्थित कस्टम एनक्लेव परियोजना के चरण - I के निर्माण हेतु भूमि पूजन की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	1
7	कर प्रदाता अनुभाग के नवीनीकरण की झलकियाँ	कर प्रदाता अनुभाग	3
8	खादी महोत्सव कार्यक्रम की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	4
9	आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	5
10	सुख की परिभाषा	मनोज कुमार केडिया, आयुक्त	6
11	कविता	आदित्य सिंह, कर सहायक	8
12	कैंटीन की दास्तान	उदय कुन्दर, कैंटीन सहायक	10
13	मैं नारी हूँ	सुहासिनी दिलीप नार्वेकर, निजी सहायक	11
14	भारत और जनभाषा (संकलित)	अनिल कुमार, सहायक आयुक्त	12
15	गजल	अयाज अहमद कोहली, अपर आयुक्त	14
16	प्रेमार्त	पीयूष गोयल, उपायुक्त	15
17	अज्ञात चितवन	पीयूष गोयल, उपायुक्त	16
18	बच्चों की कलाकृतियाँ	जागृति एच.जोशी, सहायक निदेशक (राजभाषा) के नाती, नातीन(पर्व-प्रेक्षा)	17
19	बहुत खूबसूरत हो तुम	अभिषेक कुमार चौधरी, कर सहायक	18
20	देश की पुकार	उदय कुन्दर, कैंटीन सहायक	19
21	मोबाईल वेड	मोहन ना. दलकर, निवारक अधिकारी	20
22	कविता	प्रेम प्रकाश मीना, कनिष्ठ अनुवादक	21
23	कर्म	स्व. कर्मवीर सिंह, उपायुक्त	22
24	गणपति एवं सत्यनारायण पूजा की झलकियाँ	समूह 'सी' विभाग	24

अनुक्रमणिका

क्र	विषय	लेखक का नाम/ पदनाम	पृष्ठ
25	अध्यक्ष सीबीआईसी के भ्रमण की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	25
26	महिला उद्यमी समारोह की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	26
27	हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ	हिंदी अनुभाग	27
28	सीमाशुल्क, मुंबई के अधिकारियों की खेल गतिविधियों की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	28
29	हिंदी पखवाड़ा समारोह 2021- संक्षिप्त रिपोर्ट	हिंदी अनुभाग	29
30	राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान (प्रथम पुरस्कृत निबंध)	सच्चिदानंद पाण्डेय, कर सहायक	30
31	राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान (द्वितीय पुरस्कृत निबंध)	धर्मेन्द्र कुमार धनेश, अधीक्षक	33
32	मेरी प्रिय पुस्तक (तृतीय पुरस्कृत निबंध)	आदित्य सिंह, कर सहायक	35
33	हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियाँ	हिंदी अनुभाग	37
34	हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह की झलकियाँ	हिंदी अनुभाग	39
35	हिंदी पखवाड़े में आमंत्रित कवियों एवं विजेताओं को सम्मानित/ पुरस्कृत करने की झलकियाँ	हिंदी अनुभाग	41
36	कविता	मुकेश मिश्रा, अधीक्षक	44
37	i. चंद लम्हे, ii. अनमोल वक्त	i. पि.दि. विजयम, सहायक आयुक्त ii. प्रेम प्रकाश मीना, कनिष्ठ अनुवादक	45
38	पापा की खुशी	सोमवीर, कर सहायक	46
39	i. होली ii. दिल की आवाज	संजय कुमार एस. बुन्देला, सहायक आयुक्त	47
40	हमारे अन्न दाता	संजय कुमार एस. बुन्देला, सहायक आयुक्त	48
41	पितृ - ऋण	शिशिर सौरभ, मूल्य निरूपक	49
42	सतर्कता जागरूकता सप्ताह की झलकियाँ	सतर्कता अनुभाग	50
43	सतर्कता जागरूकता सप्ताह में पुरस्कार वितरण की झलकियाँ	सतर्कता अनुभाग	51
44	वित्तमंत्री महोदया के भ्रमण की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	52

वड़ाला स्थित कस्टम एनक्लेव परियोजना के चरण - I के निर्माण हेतु भूमि पूजन की झलकियाँ

वड़ाला स्थित कस्टम एनक्लेव परियोजना के चरण - I के निर्माण हेतु भूमि पूजन की झलकियाँ

कर प्रदाता अनुभाग के नवीनीकरण की झलकियाँ

खादी महोत्सव कार्यक्रम की झलकियाँ

आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ

सुख की परिभाषा

जीवन का आधार खुशी एवं प्रेम है । यह ज्ञान जीवन का सबसे मूल्यवान एवं सरल ज्ञान है । खुशी, प्रेम, शांति से ही ज़िंदगी के नए रास्ते तथा आयाम खुलते हैं । सभी इस ज्ञान से अवगत हैं फिर भी मानव जाति इन भावों को, स्थितियों को चकनाचूर करके प्रगति के दूसरे रास्ते ढूँढता है । आम समझ में प्रगति का मतलब होता है - भौतिक प्रगति । यह माना जाता है कि भौतिक प्रगति के बाद ही खुशी, प्रेम एवं शांति आती है । इसीलिए समाज भौतिक प्रगति के लिए पूरी मेहनत करता है । समाज की इस सोच के कारण आम व्यक्ति अपनी दिनचर्या धन-अर्जन में लगाता है । जिन्दगी का मकसद धन-अर्जन करना रह जाता है । उन्हें लगता है कि धन- अर्जीत करने के बाद खुशी, प्रेम तथा शांति अपने आप आ जाएगी । पहली नज़र में यह बात सही भी लगती है, लेकिन परिणाम कुछ और ही देखे गए हैं । आज यह सिद्ध हो गया है कि खुशी, प्रेम एवं शांति मानव की अलग अलग भावनाएं हैं, जिसे विचार द्वारा जाग्रत किया जा सकता है । इन भावनाओं को भौतिक व्यवस्था से जोड़ने की जरूरत नहीं है । भौतिक व्यवस्था शारीरिक सुख देती है, परंतु खुशी, प्रेम एवं शांति भावनात्मक सुख देती है। शारीरिक सुख एवं भावनात्मक सुख जीवन के अहम पहलू हैं । शारीरिक सुख के लिए व्यक्ति दिन रात मेहनत करता है परंतु ऐसा लगता है कि भावनात्मक सुख अपने आप आ जाएगा, परंतु ऐसा होता नहीं है । भावनात्मक सुख के लिए उन्हें अपने विचारों पर काम करना होता है, जिसके लिए केवल सरल ज्ञान की जरूरत है । यह देखा गया है कि यदि व्यक्ति भावनात्मक रूप से सुखी नहीं है तो वह शारीरिक रूप से सुखी नहीं रह सकता । मन से ग्रसित व्यक्ति अपने धन का सुख भोग नहीं सकता । इसके विपरीत यह पाया गया है कि भावनात्मक रूप से संतुलित व्यक्ति भौतिक रूप से ज्यादा सफल है । अतः बच्चों में यह संस्कार दिये जाते हैं कि वे पहले खुश हो जाएँ फिर जीवन के सारे काम करें । वे प्रेम एवं शांति के साथ काम करें ।

खुशी, प्रेम एवं शांति जीवन जीने का तरीका है । ये गुण भौतिक तरक्की के लिए औज़ार हैं । इन्हें पाना जीवन का मकसद नहीं हो सकता । इन गुणों को हमेशा साथ रखना जीवन का

मकसद होना चाहिए । ये सभी भावनात्मक गुण सभी को बनाना आना चाहिए । आध्यात्म अपने आप में विज्ञान है जो खुशी, प्रेम एवं शांति को बनाना सिखाता है । ये तीनों भावनाएं बहती भावनाओं की तरह है जैसे लगातार बहती नदी का पानी । जीवन में भी इन भावनाओं के साथ नकारात्मक भावनाएं भी आती रहती हैं, परंतु आध्यात्मिक ज्ञान हमें नकारात्मक दिशा से पुनः सकारात्मक दिशा में मोड़ देता है । नकारात्मक एवं सकारात्मक भावनाओं की लड़ाई जीवन में लगी रहती है, परंतु आध्यात्मिक ज्ञान एवं उसका अभ्यास सकारात्मक भावनाओं को बरकरार रखता है ।

प्रश्न उठता है कि अगर व्यक्ति को खुशी, प्रेम एवं शांति बना के रखना इतना आसान है तो आज के समय में इसकी इतनी कमी क्यों? इसका मूल कारण है सामाजिक सोच । सामाजिक सोच भौतिक सुखों पर केन्द्रित है । शिक्षा व्यवस्था भी भौतिक सुखों की बातें करती हैं । यह एक गहरी सोच है कि खुशी, प्रेम एवं शांति जैसी भावनाएं सिखाई नहीं जा सकतीं, वे अपने आप आती हैं तथा भौतिक सुख के साथ अपने आप आ जांएगी । मुझे तो लगता है कि इस सोच के कारण समाज के आम व्यक्तियों में खुशी, शांति एवं प्रेम की कमी है । आध्यात्म के विज्ञान द्वारा इन भावनाओं को लगातार बनाया जा सकता है ।

मनोज कुमार केडिया
आयुक्त सीमाशुल्क (आयात)

कविता

'' शिव ''

तज अमृत, पी गरल, बन नीलकण्ठ,
तुम हुए अमर, हे चिरयोगी,
हे महाकाल, तुम्हें प्रणाम ।

तुम असुर संहारक, महादेव,
हे कैलाशी, हे अविनाशी,
तुम्हें प्रणाम ।

अगर कहो '' हाँ ''

अगर कहो '' हाँ ''
तो तुमसे एक बात कहूँ.
पर हाँ, हँस ना देना,
अगर कुछ कच्चे सवाल करूँ.

सुना है, तुम जमीं से दूर रहते हो कहीं,
तो आओ न, एक बार बस,
मुझे भी ले चलो वही.

कुछ सुन लेना मेरी,
अपनी कुछ सुना देना.
अगर करूँ तंग तुमको,
तो मीठी थपकी से सुला देना.

माँ कहती है तुम आते हो,
पर जब मैं सो जाता हूँ.
और वो मीठे सपने,
तुम ही दे जाते हो.

कितने अच्छे हो !
पर रात में इतनी देर से क्यों आते हो ?
और फिर कितने सवेरे तुम चले जाते हो !
मैं जान भी नहीं पाता !

पर माँ बताती है,
उस गमले के गुलाब को तुमने ही महकाया है,
घास पर ओंस तुमने ही बिखराया है.
चिड़ियों को गाना तुमने ही सिखाया है.

छोटी सी गिलहरी सामने पेड़ पर,
न जाने क्या दोनों हाथों से पकड़ कर
कुतरती रहती है.
माँ कहती है,
तुमने ही उसे ये पकड़ाया है,
एक बात पूछता हूँ,
माँ तो मेरे साथ सो जाती है,
उसे कैसे पता तुम आये थे?
पूछा नहीं अभी माँ से,
पूछूँगा, पर तुम भी बताना मुझे ।

तुम ही हो न जो सूरज को चमका जाते हो,
धरती को नहला जाते हो ।
जादू की छड़ी है क्या कोई तुम्हारे पास ?
पूछा था माँ से मैंने, तो उसने कहा था -
पूछ लेना अपने भगवान से ।

'' आना तुम ''

कभी कभार, रास्ते पर चलते,
मुझे अनोखे पत्थर मिलते हैं ।
कुछ गोल मटोल, कुछ बेढंग से दिखते हैं ।

न चाह के भी, उन पर ठोकर दे देता हूँ,
जानता हूँ तुम्हारी सत्ता के अंग हैं वे,
पर क्या करूँ ?
दूसरो की ठोकर से उन्हें दूर तो कर देता हूँ ।

नहीं आता तेरे घर मैं,
ना ही तेरे चबूतरे पर।
फिर भी तू चाहे मुझे,
तेरी बड़ी कृपा मुझ पर ।

याद आज फिर आई तेरी,
क्या तूने मुझे याद किया था?
आ पड़ी हिचकी मुझे,
क्या तूने मेरा नाम लिया था?

लाख कहे तू ना ना, मैं तो ना मानूँ ।
अब तो तेरी हर लीला पहचानूँ ।
कल शाम को मिलना सड़क पर,
निकलूंगा पक्का, तुम भी आओगे,
बस इतना ही जानूँ ।

'' तुम तक ''

इक पगडण्डी है, चलता हूँ जिस पर,
सोचता बस यही, कभी खत्म न हो,
ये सफर तुम तक पहुंचने से पहले।

चाहता नहीं, रुकना ।
भले ही, कदम रुक जाएं,
सांस रुक जाए, पर सफर रूह का,
थमे ना, तेरी रूह तक पहुंचने से पहले ।

चूम लूं, तेरा हाथ, इन हवाओं से पहले ।
तेरी आँखों में देख लूं,
मेरी रूह को उतरते,
शाम के ढलने से पहले।
उगे सूरज, सुबह कल जब ।
मिले मेरी रूह, उसे,
तेरी इश्क़ के चादर तले।

'' गुलामी ''

कतरा कतरा दिन, लम्हा लम्हा शाम,
तिनका तिनका ख़्वाब, चिंदी चिंदी,
टूटते - जुड़ते, ख्वाहिशें और अरमान।

आना जाना, जाना आना,
साँसों का घुट घुट के,
तेज मद्धम, मद्धम तेज,
सदमे दिल और धड़कन के,
चलना रुकना, रुकना चलना,
पांवों का थक थक के।

रुक के, मुड़ के, जोह रहे,
तेरी आहट, और आवाज।
आकर, चूम लेगी तू फिर से,
जिंदगी, ना भूल तू अपने अंदाज।

हौले हौले घिरती है,
घुप्प अंधेरी रात ।
चुपके चुपके रोते हैं,
खुशियों के ख़्यालात।

दबे पांव फिर आती हैं,
नींद पलकों पर बेहिसाब,
भूखे ही सो जाती हैं,
आँखें बिन कोई जज़्बात।

सुबह की झोली भरती है,
किरणें आकर हाथ पैर चल पड़ते हैं,
भौंचक होते दिल के साथ।
है गुलामी पेट की,
या फिर सपनों का अहसास ।

'' जैसा तु है ''

रख दे ना तू, एक पत्थर बड़ा सा,
राह में मेरे, जो मंजिल को ढक जाए.

एक पहेली सा रच देना,
बेराह की जंगल में,
ले जा के मुझको रख देना,
ढूढंता रहूँ जहां 'राह' मैं,
और यूँ 'राह' ही मंजिल बन जाए.

रख छोड़ना ना कोई कसर,
बस अकेला करूँ मैं सफर
जज्बातों को ज़रा परे कर,
क्यों रखे तू मुझे बांधकर?

बेध दे ना एक तीर से मुझको,
जो मुक्त कर दे 'बेध' से मन को.
छोड़ दे ना गाँठ से अपनी,
जरा दौड़ आऊं राह पर अपनी.

भुला दे ना तू मुझे,
पर मैं तुझे ना भूल पाऊँ.
सुन एक चाह मेरी,
अब और ना कोई चाह पाऊँ.

कर दे निस्वार्थ मुझे,
बना दे निष्पाप मुझे,
बहुत माँगा तुमसे ये सब,
आज कहूँ बस इतना तुमसे ...

जैसा तू है, क्या वैसा ही मैं हूँ?
अगर हाँ तो ठीक है,
और अगर नहीं, तो क्यों?
जवाब का इंतजार रहेगा.

आदित्य सिंह
कर सहायक

कैंटीन की दास्तान

हर दफ्तर के कार्य हैं महान,
कैंटीन है इसके स्वाद की खान ।
सुबह सबेरे चाय की चुस्की,
भगा देती है आलस सबकी ।
कोई कहता चीनी कम है,
कोई कहता - भाई चाय में दम है ।
मध्याहन का भर पेट भोजन,
कर लेते काम के बीच सब जन ।
पतली दाल क्यों हो बनाते,
महंगी सब्जियां क्यो नहीं लाते ।
फिर भी यहां सजती है थाली,
देर करने पर हो जाती है खाली ।
स्वाद की कमी पर हो जाती बहस,
सुझावों के बादल गरजते हैं बरस ।
शाम की चाय का मजा ही अलग है,
कचौडी - पकौडियों का साथ भी सब है ।
पेट से दिल का रास्ता है आसान,
यहां दिल करता है पेट को परेशान ।
मां जैसी प्यार से परोसती,
बच्चों से अपनी तारीफ को तरसती ।
ममता का चूल्हा जलाती रहेगी,
कैंटीन से नाता कभी न मिटेगी ।

उदय कुन्दर
कैंटीन सहायक

मैं नारी हूँ

मैं नारी हूँ ना हारी हूँ
ना हारूँगी ।
मैं सबला हूँ ना अबला हूँ
ना अबला रहूँगी ।
मैं इन्सान हूँ, ना बोझ हूँ
मैं एक सोच रहूँगी
मैं पत्थर हूँ, ना मिट्टी हूँ
ना किसी को कुचलने दुँगी ।
मैं परिवार हूँ, ना दीवार हूँ
ना दीवार बनूँगी
मैं एक दिल हूँ, इक दिल की दवा हूँ ।
ना दर्द बनूँगी
मैं इक सहारा हूँ, मैं इक पहारा हूँ ।
मैं आधार बनूँगी
मैं बगिया हूँ, मैं इक पहारा हूँ ।
मैं आधार बनूँगी
मैं बगिया हूँ, मैं नदियाँ हूँ
मैं पतझर में सवाँरुगी ।
मैं नारी हूँ, ना हारी हूँ,
ना हाँरुगी ।

सुहासिनी दिलीप नार्वेकर
निजी सहायक

भारत और जनभाषा

भारत के लिए एक जन भाषा की आवश्यकता है, यह निश्चित हो जाने पर प्रश्न यह उठता है कि वह कौन सी भाषा है जो सबके लिए उपयुक्त है। कुछ वर्गों में यह कहा जाता है कि जब अंग्रेजी को यह स्थान पहले ही मिला हुआ है तो किसी भारतीय भाषा द्वारा उसे विस्थापित करने की क्या आवश्यकता है और उसे ही क्यों नहीं चलते रहना चाहिये। यह सच है कि वर्तमान समय में एक जन भाषा से जो आशा की जाती है और जो उसकी जरूरत है, वह अंग्रेजी से कर रही है। अंग्रेजी से यह भी लाभ है कि उसके पास एक समृध्द और लचीली शब्दावली है, वह दुनिया के बहुत बडे भू-भाग में समझी जाती है और उसने अपना एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर भी बना लिया है। उसकी उपयोगिता है और किसी एक भारतीय भाषा के लिए वह स्थान प्राप्त करना कठिन है।

इन सब विशेषताओं के होते हुए भी अंग्रेजी इस देश की भाषा नहीं है और जो राजकीय संरक्षण उसे मिल रहा है, यदि वह हट जाता है तो उसकी व्यापक लोकप्रियता जो आज है वह समाप्त हो जायेगी। इसके अतिरिक्त कोई भी विदेशी भाषा देश में अजनबी रहती है और देश का कोई भी भाग उसे उस रूप में ग्रहण नहीं कर सकता जैसे अपनी भाषा को। इसलिए अंग्रेजी का अध्ययन तो होगा पर उसका अध्ययन एक कृत्रिम राजकीय सहायता के रूप में कभी भी जड़ नहीं पकड सकेगा और वह देश के किसी भी भाग के जन समुदाय की भाषा नहीं बन सकती, जबकि भारतीय भाषा देश के कुछ भाग की, समस्त वर्ग की और देश के एक भाग के जन समुदाय की भाषा रहेगी। उसका संबंध अन्य प्रांतीय भाषाओं से भी होगा और इस प्रकार वह अन्य प्रांतो की जनता द्वारा भी आसानी से ग्रहण की जा सकेगी। इस प्रकार हमारा निर्णय किसी भारतीय भाषा तक सीमित है। इसका यह मतलब नहीं है कि अंग्रेजी का सीखना पूरी तरह से बंद हो जायेगा। सारे अंतर्राष्ट्रीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का अध्ययन होगा जो उसकी साहित्यिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक, समृध्दि है उसके लिए भी उसका अध्ययन होगा पर उसका अध्ययन कुछ ही लोग करेंगे और उसकी महत्ता इस पर ही निर्भर करेगी कि किस विशेष कारण से वह उपयोगी है। आज भी बहुत से भारतीय दुसरी विदेशी भाषा इसलिए सीखते हैं, जिससे कि वह वैज्ञानिक और शोध पत्रिकाओं को पढ़ सकें या ऐसे ही अन्य कारणों से। भारतीय भाषाओं में निश्चिय ही हमारी दृष्टि हिंदी या हिंदुस्तान की और है जो सबसे अधिक बोली या समझी जाती है और उसका नाम हम चाहे जो भी दें, उसमें अच्छा साहित्य है, उसके विकास की योग्यता है और वह उत्तर भारत की समस्त भाषाओं से जुड़ी हुई है। वह इनमें से किसी भाषा के बोलने और जानने वाले लोगों द्वारा आसानी से सीखी जा सकती है। दक्षिण भारतीय भाषाओं से सीखी जा सकती है। दक्षिण भारतीय भाषाओं में भी संस्कृत से व्युत्पन्न अनेक शब्द है, विशेषकर तेलुगू, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं में। यह बात स्वीकार की जानी चाहिए कि हिंदी या हिंदुस्तानी की शब्दावली को पर्याप्त समृध्द करना है जिससे कि हर प्रकार के आधुनिक विचार - वैज्ञानिक, प्रशासकीय, राजनैतिक, अभियांत्रिकी और औद्योगिक भावों को वह स्पष्ट कर सके। यह स्थिति समस्त भारतीय भाषाओं की है। देश की जन-भाषा को जहाँ तक संभव हो सके, आसान बनाना होगा जिससे कि वह जिन लोगों क्षेत्रों मे बोली और समझी नहीं जाती है, वहाँ भी लोग उसको स्वीकार कर सकें। यह आवश्यक है कि हिंदी या हिदुस्तानी शुध्दता वादी की दृष्टि से विदेशी और अस्पष्ट व्युत्पत्ति वाले शब्दों के बहिष्कार की नीति न अपनाएं नए भावों के लिए नए शब्द गढ़ने से पहले, पहले कोशिश यह होनी चाहिए कि जो शब्द उपलब्ध है या जो शब्द आसानी से घुल मिल सकता है उसे अपनाया जाये।

प्रांतीय भाषाएं भी विकसित भाषाएं हैं और वह शब्द भंड़ार के संदर्भ में हिंदी या हिंदुस्तानी की बहुत सहायता कर सकती हैं। इसलिए एक भावाभिव्यक्ति जो एक या एक से अधिक प्रांतीय भाषा में उपलब्ध है, उसे हिंदी या हिदुस्तानी में क्यों न स्वीकार कर लिया जाए। केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति में प्रयुक्त शब्द ही नहीं वरन लोक भाषाएं भी बहुत सहायता कर सकती है, जैसा कि पंडित राम नरेश त्रिपाठी ने संकेत दिया है कि ग्रामीण बोलिया जीवित भाषाएं हैं और वे निरंतर आवश्यकताओं के अनुरुप उपयुक्त शब्द को गढ़ती रही हैं। मैं एक उदाहरण द्वारा यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि हिंदी भाषा क्षेत्र की बोलियों में किस प्रकार संज्ञाओं से क्रिया बनाई जाती है, जब कि साहित्यिक हिंदी में वही भाव दूसरी क्रियाओं को जोड़कर बनाया जाता है। इस प्रकार मिट्टी से बनी हुई क्रिया मटियाना बनी हैं। जिस अर्थ में बर्तन मांजना, धोना अथवा मिट्टी से ढ़कना हैं। इसी तरह से हाथ से हथियाना (हाथ में लेना) का अर्थ भी सामान्यतः किसी चीज को, अलग ढ़ंग से ले लेता हैं। इसी प्रकार लात (पैर) से लतियाना का अर्थ पैर से ठोकर मारना हैं। यदि हम 'चैंबर्स' शब्दकोष जैसे लोकप्रिय अंग्रेजी शब्दकोष के विभिन्न संस्करणों को, जो पिछले पचास वर्षों में प्रकाशित हुए पहले प्रकाशित और आज प्रकाशित हुए शब्दकोष में बहुत बड़ा अंतर हैं। वस्तुतः शब्दकोष के मूल भाग में जोड़े गए शब्दों के अतिरिक्त हर संस्करण में एक परिशिष्ट है जिसमें शब्दों की बहुत बड़ी संख्या ऐसी है, जिनका भाषा में आत्मीकरण अभी नहीं हुआ है, किंतु वे प्रचलन की प्रक्रिया में हा।

इसलिए हिंदी या हिंदुस्तानी को अत्यधिक उदार नीति का आश्रय लेते हुए शब्दों को ग्रहण करना चाहिए, चाहे उसका स्रोत कोई भी समय के प्रवाह में शब्दों की अर्थ छायाएं विकसित होंगी। इसलिए जन - भाषा के विकास के लिए यह मूल सिध्दांत बना देना आवश्यक है कि विदेशी व्युत्पत्ति वाले शब्दों का बहिष्कार न करके जो विदेशी शब्द भारत या भारत के बाहर दूसरी भाषाओं में प्रचलित है उन्हें स्वीकार करेगी। इस प्रकार यह विवाद व्यर्थ है कि भाषा हिंदी हो या हिंदुस्तानी दोनों एक ही हैं। दोनों में जो अंतर है वह इतना कम है कि उसकी आसानी से उपेक्षा की जा सकती है। अंतर केवल शब्दावली का है और यदि हम बहिष्कार के बदले स्वीकृति को अपना ले तो वाद - विवाद का कोई अर्थ ही नहीं रह जाएगा।

तकनीकी महत्व के शब्दों के निर्माण की आवश्यकता हैं। भारत की वर्तमान भाषाओं में यह शब्द नहीं मिलेंगे और अभारतीय भाषाओं से इन शब्दों को लेना कठिन और बोझिल होगा जब कि एक निर्मित भारतीय शब्द आसानी से भाषा में घुल-मिल सकेगा। किस स्रोत से ये शब्द लिए गए? जहां तक मुझे लगता है समस्त भारतीय भाषाओं का उर्दू को छोडकर एक स्रोत है जहां से पहले और आज भी निः संकोच शब्दों को लिया गया हैं। वह स्रोत संस्कृत है। इस लिए इस बात से इंकार नही किया जा सकता है कि एक नए भाव की अभिव्यक्ति के लिए जिसके लिए किसी भारतीय भाषा में कोई शब्द उपलब्ध नहीं है, वह संस्कृत के संपन्न स्रोत से लिया जाए। इसमें हम बच भी नहीं सकते। यह बात हिंदुस्तानी और हिंदी दोनों के लिए है।

(भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के ऐतिहासिक लेख से उद्दत)

संकलनकर्ता - अनिल कुमार
सहायक आयुक्त

यह गजल उन् तमाम लोगों के नाम जो हम से अचनाक बिछड़ गए । ख़ास कर इस कोरोना के समय में ।

ऐ दोस्त जाते जाते, हैरान कर गया
तू खुल के जीने की वजह से कैसे मर गया

सूनी पड़ी हैं सड़कें, गलियां हैं जैसे बीहड़
तू क्या गया के जैसे, सारा शहर गया

पहले क्या कम ज़हर था, इस शहर की फ़िजा में
अब इक नयी वबा का रंग, भी बिखर गया

महफ़िल में सुबह तक तू ही रहता था बदस्तूर
फिर कैसे आज उठ के तू पहले पहर गया

वो बुत, सनम, वो मेहरबाँ, कि जिस पे था मुझ को गुमां
वो आज मुझे छोड़ के, जाने किधर गया

ऐ यार तू सही था, बस वक़्त ही बुरा था
बुरा वक़्त तो न गुज़रा, तू ही गुज़र गया

अयाज़ अहमद कोहली
अपर आयुक्त

प्रेमार्त

मैं राह देखती थी कबसे, रातें कटती तारे गिन-गिन,
शब्दों का जाल बनाकर तुम, छल करते थे मुझसे निश-दिन,
अब नयी कहानी न गढना, मैं सत्य उसे न मानूँगी,
हठ समझो या अधिकार मेरा, ना आज तुम्हें जाने दूँगी ।

वर्षों से व्याकुल नयन मेरे, अब तुम्हें देख लें जी भरके,
फिर से ओझल ना हो जाओ, इस डर से ना झपके पलकें,
कुछ देर समय रुक जाए यहीं, मैं तो बस इतना चाहूंगी,
हठ समझो या अधिकार मेरा, ना आज तुम्हें जाने दूँगी ।

इस विरह ताप मे जल-जल के, मैं तुम बिन कैसे जीती थी,
हो मिले आज तो सब कह दूँ, घड़ियाँ युग सी जो बीती थीं,
पर तुम जो अपनी बात कहों, मैं अविरल सुनती जाऊँगी,
हठ समझो या अधिकार मेरा, ना आज तुम्हें जाने दूँगी ।

यूँ दूर खड़े हो, रुठो ना, क्या मुझमे कोई दोष हुआ,
सर्वस्व तुम्हें हूँ सौंप चुकी, फिर मुझपर कैसे रोष हुआ,
जो छाया बन मैं साथ चलूँ तो धन्य स्वयं को जानूगी,
हठ समझो या अधिकार मेरा, ना आज तुम्हें जाने दूँगी ।

ओ निर्मोही ! यूँ छोड़ मुझे, जब दूर चले तुम जाते हो,
इस विरह अगन में दासी को, झुलसाकर क्या सुख पाते हो,
अब 'पीयूष सरित से मन भर दो, मैं और नहीं कुछ मांगूँगी,
हठ समझो या अधिकार मेरा, ना आज तुम्हे जाने दूँगी ।

पीयूष शुक्ला
उपायुक्त, सीमा शुल्क

अज्ञात चितवन

सरल सौम्य सुकुमार रुप ज्यों शिशिर काल में मधुर धूंप,
तन से लिपटे तारे झलमल, लहरों की ध्वनि बजती कल-कल,
पुलकों से झाँके नयन लाल, ज्यों फेला रहे हों इंद्रजाल,
होठों पे खिलते पुष्पदल, ज्यों 'पीयूष' सरित, हृदय चंचल,
माथे पर अलकों के बादल, पलकों पर रजनी का काजल,
है मन में जिसका बिम्ब अटल, वो तेरा सुंदर रुप सकल ।

अपने भावों की छाया में, कलरव कोलाहल साथ लिए,
निर्मल 'पीयूष' सरित बहती अविरल जिसके अंतःस्थल में,
जिसके नयनों की गहराई में, नीलम आभा छा जाती है,
वोचमक दिखे जिससे मन की शीतलता ठंडक पाती है,
जिसमें वसन्त की है उमंग, और गोधूलि सी ममता हो,
जिसके सुंदर रुप सकाल से हर क्षण तेज बरसता हो,
उस उज्ज्वल सौन्दर्य मूर्ति की, एक सजीव प्रतिमा हो तुम,
मेरे मन के इस उपवन की, सुंदरता हो, सुषमा हो तुम ।

नव उत्साह, नवीन शक्ति बन, इस धरती पर उतरी हो,
मैंने जो गीत सँजोये है, तुम उन गीतों की लहरी हो,
तुम कार्तिक पूनम की चाँदनी, फाल्गुन की धूंप सुनहरी हो,
मन गीतों के गिरि शिखर पर बसने वाली गौरी हो ।

तुम शौर्य मेरा, तुम शक्ति मेरी, मेरे जीवन का उद्देश्य तुम्हीं,
तुम 'पीयूष' सरित का उदगमस्थल, तुम ही हो मेरी कर्मभूमि,
मेरे हृदय में बसी हो तुम, मन मंदिर कपाट की प्रहरी हो,
आकांशाओ के हिम शैल गिरि पर बसने वाली गौरी हो ।

हर पग पर साथ हो तुम मेरे, मेरे नयनों की ज्योति हो तुम,
मेरा साहस, मेरी प्रेरणा, मेरे लिए ऊर्जा स्त्रोत हो तुम,
इस क्षत-विक्षत, खंडित हृदय को, तुम बांधने वाली डोरी हो,
स्वर्ण सुनहरे स्वप्नों में नित आने वाली गौरी हो ।

पीयूष गोयल
उपायुक्त, सीमा शुल्क

बच्चों की कलाकृतियाँ

जागृति एच. जोशी, सहायक निदेशक (राजभाषा) के
नाती-नातीन (पर्व - प्रेक्षा) की कलाकृतियाँ

बहुत खूबसूरत हो तुम

बहुत खूबसूरत हो तुम...
बहुत खूबसूरत हो तुम...
कभी मैं जो कह दूँ मोहब्बत हैं तुमसे,
तो मुझको खुदारा गलत मत समझना
कि मेरी जरुरत हो तुम...
बहुत खूबसूरत हो तुम...

है फूलो की डाली ये बाँहे तुम्हारी,
है खामोश जादू निगाहे तुम्हारी,
जो काँटे हो सब, अपने दामन में रख लू,
सजाऊँ मैं कलियो से राहे तुम्हारी,
नजर से जमाने की खुद को बचाना,
कि मेरी अमानत हो तुम,
बहुत खूबसूरत हो तुम...

है चेहरा तुम्हारा, कि दिन है सुनहरा
और उसपर ये काली घटाओ का पेहरा...2
गुलाबो से नाजुक मेहकता बदन है,
ये लब है तुम्हारे कि खिलता चमन है,
बिखेरों जो जुल्फे... तो सरमाये बादल...2
ये जाहिद भी देखे तो हो जाये पागल
तो पाकिजा मूरत हो तुम...
बहुत खूबसूरत हो तुम...

कभी मैं जो कह दूँ मोहब्बत है तुमसे
तो मुझको खुदारा गलत मत समझना
कि... मेरी जरुरत हो तुम

बहुत खूबसूरत हो तुम...
बहुत खूबसूरत हो तुम...
जो बनके कली मुस्कुराती है अक्सर...
सबे हिज्र मे जो रुलाती है अक्सर...2
जो लम्हो ही लम्हो मे दुनिया बदल दे...2
जो शायर को दे जाय पहलू गजल के
छुपाना जो चाहे छुपायी ना जाये,
भुलाना जो चाहे भुलायी ना जाये,
वो पहली मोहब्बत हो तुम,
बहुत खूबसूरत हो तुम...2

कभी मैं जो कह दू मोहब्बत है तुमसे,
तो मुझको खुदारा गलत मत समझना,
कि... मेरी जरुरत हो तुम...
बहुत खूबसूरत हो तुम...
बहुत खूबसूरत हो तुम...

अभिषेक कुमार चौधरी
कर सहायक

देश की पुकार

एक समय था भारत माता का विश्व में सर्वश्रेष्ठ स्थान था । न केवल अध्यात्म नाम से अपितु विज्ञान तथा वाणिज्य के क्षेत्र में भी उसकी बराबरी कोई अन्य राष्ट्र नहीं कर सकता था । उसके अनेक वीर-वीराँगनाओं ने अपनी कर्मठता एवं साधना से ऐसी सभ्यता और संस्कृति की रचना की थी, जिसे आज भी विश्व आदर की दृष्टि से देखता है। उस समय भारत माता सुन्दर और हष्ट-पुष्ट थी ।

इसके पश्चात् वह समय भी आया जब हम अपने आदर्शों को भुल गये स्वार्थ और आपसी द्वेष ने इतना जोर पकड़ा कि हमें यह भी स्मरण नहीं रहा कि हम सब एक माता की सन्तान हैं । जाति-पाति, और छुआछुत के चक्कर में पड़कर हम अनेक छोटे-छोटे टुकडों में विभक्त हो गये जिसमें हमारी शक्ति विघटित हो गयी और अपने सांस्कृतिक, चारित्रिक, नैतिक तथा आर्थिक पतन के साथ - साथ अपनी राजनैतिक स्वतंत्रता भी खो बैठे और आध्यात्मिक और धार्मिक आदर्श विलासप्रियता में परिणित हो गये । अज्ञान व दुराचार का आधिपत्य बढ़ा और देश अधोपतन के गर्त में प्रविष्ट हो गया । इस परिस्थिति में प्रत्येक भारतवासी का और विशेषतः युवा वर्ग का यह परम कर्तव्य हो जाता हैं कि वह निस्वार्थ होकर व्यक्तिगत लक्ष्यों को त्याग कर देश के विकास में समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और अन्य कुरीतियों को समाप्त करने में अपना पुर्ण सहयोग करे । इसके लिए युवा वर्ग के साथ हम सभी को कमर कसकर हमें देश के विकास के लिये समाज में फैली इन कुरुतियों का प्रबल विरोध करना होगा । इसमें सफलता पाने के लिये प्रत्येक नागरिक को ओर विशेषतः लोक सेवाओं की असत्य, स्वार्थपरता और अभद्र आचरण से मुक्त रहने का पवित्र व्रत धारण करना होगा ।

अंत में कहना चाहूँगा कि हम अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार व आर्थिक विषमता रूपी दानवों का अन्त करके भारतमाता के प्राचीन गौरव और वैभव की पुनः प्रतिष्ठा कर महात्मा गाँधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोस के स्वप्नों के भारत का साक्षात् दर्शन कर सकेंगे । यही समय की पुकार है, यही देश की पुकार है।

उदय कुन्दर
कैंटीन सहायक

मोबाईल वेड

हाय । यह मोबाईल पागल पन ।
यह पूरी दुनिया को अपने वश मे कर गया ।
जब तक फोन वायर से बंधा था ।
इन्सान आजाद था ।
जब से फोन आजाद हुआ है ।
इंसान फोन से बंध गया है ।
उँगलिया ही निभा रही है रिश्ते आजकल ।
जुबान से निभाने का वक्त कहाँ है इन्सान को ।
सब टच में बिजी है ।
पर टच में कोई नहीं है ।
आज कल दोस्त और रिश्तेदार सब यही तो मिलते है ।
ये मोबाईल, हाथ की घडीं खा गया ।
ये किताब भी खा गया ।
ये रेडिओ, ऑडियो को खा गाया ।
ये कैमरा खा गया ।
ये कैलक्युलेटर भी खा गया ।
ये इन्सानों का मेल मिलाप खा गया ।
ये रिश्ते - नाते खा गया ।
ये लोंगो की यांद्दाश्त खा गया ।
ये सबकी तंदरुस्ती खा गया ।
ये हमारा वक्त खा गया ।
ये हमारा सुकून खा गया ।
कमबख्त...
इतना कुछ खा-खाकर भी स्मार्ट बना ।
बदलती दुनिया का ऐसा असर होने लगा ।।
आदमी पागल / दीवाना और फोन स्मार्ट होने लगा ...

मोहन ना. दलकर
सीमाशुल्क, अधीक्षक

कविता

हिन्दी मेरे रोम रोम में । हिन्दी में, मै समाया हूँ ।।
हिन्दी की पूजा करता हूँ । हिन्दुस्तान का जाया हूँ ।।
हिन्दी का प्रकाश फैलाने आया हूँ । अमूल्य रत्नों से गर्वित ।।
हिन्दी शब्द का सार । कौन करेगा इसकी समता ।।
महिमा अपरंपार । विभिन्न छंदो से रचित ।।
तद्भव तत्सम भाव । यथार्थ धरा से परिपूर्ण है ।।
हिन्दी शब्द का ज्ञान । सत्य का स्वरुप यही है ।।
हिन्दी की पहचान, । हिन्दी मेरी जान है ।।
महानता की विभूति यही है । यह हीरो की खान है ।।
वर्णनात्मक शैली का सार । अर्थबोध का है भण्डार ।।
अमर हुए ऋषिमुनि । संत हुए महान ।।
काव्य पद संकलित हिन्दी । उपनिषदो की जान ।।
कवित सवैया रचित हिन्दी । भारत माँ की शान ।।
हर शब्द में है, गूढ़ रहस्य । अध्याय की पहचान ।।
रुप सुधा सा अमृत देता । कर देता कल्याण ।।
गुणात्मक है, हिन्दी भाषा । पर अफसोस है, प्रेम को ।।
हमारे यहॉ विडम्बना की, हिन्दी में बात करे तो ।
मुर्खतिरे कहलाते है । अंग्रेजी मे बोले तो जेन्टलमेन कहलाते है ।
अंग्रेजी का ऐसा प्रभाव हो गया । हिन्दी का दिनोदिन प्रेम खत्म हो गया
जय हिन्दी जय जय हिन्दी

प्रेम प्रकाश मीना
क. अनुवाद अधिकारी (निर्यात)

'कर्म'

राजा है वक्त, रंक है वक्त, वक्त नवाब है,
गम जिन्दगी मे आ जाए तो वक्त बेहिसाब है ।

ये दुनिया रौशन है वक्त की ही बदौलत,
दिन के उजाले मे वक्त आसमां मे आफ्ताब है

वक्त मसीना है, वक्त हसीना है, वक्त नगीना है,
चाँद की चाँदनी मे नहाया हुआ वक्त मोहताब है

स्याह रात गुजरी आया वक्त सुबह का,
फूलों पर बिखरी शबनम जैसे वक्त शराब है

वक्त नाम है विशाल दरिया और समंदर का,
वक्त रावी, वक्त सतलज और वक्त चेनाब है

सोने के वक्त चैन से सो जाईए मेरे दोस्त,
नींद मे वक्त एक खूबसूरत ख्वाब है

वक्त ही करता आया है सवालात वक्त से,
और वक्त ही इन सवालों का जवाब है

वक्त इश्क-ओ-मौहब्बत है, वक्त इबादत है,
आशिकों की आशिकी है वक्त, हसीनों का रुआब है

चाहकर भी जो लुत्फ ना उठा पाया वक्त का,
तो समझ लो यारों उसका वक्त खराब है

क्यूँ वक्त जाया करते हो मेरी शेर-ओ-शायरी मे,
वक्त तो यारों खुद एक हसीन किताब है

वक्त बर्बाद करोगे तो वक्त बर्बाद कर देगा,
कद्र करोगे 'कर्म' गर वक्त की तो तोहफा नायाब है ।

1

शमा जलती रही रात भर परवाने मचलते रहे
मेरे अरमां यूँ ही मोम की तरह पिघलते रहे

सितारों का मजमा लगा है बाम-ए -फलक पर
इंतज़ार-ए- मह मे हम रात भर टहलते रहे

हम इस कद्र गमजदा हो गए उनकी फुरक्त मे
मुसलसल मेरे रुख से अश्क-ए-हिज्र फिसलते रहे

कुछ तो निजात मिले हमको इन अंधेरों से अब
इसी पसोपेश मे हम चिरागों की तरह जलते रहे

हम-आगोश हो रही हैं ये मदमस्त हो जाएँ
हम होकर मख्र मूर कभी गिरते रहे, संभलते रहे

महफिले तन्हाई सजा दी हमने
उनके तसव्वुर मे 'कर्म' जेर-ए-लब मे
गाते रहे और सुर बदलते रहे

2

तन्हा छोड़कर हमको वो हमसफर चले गए
हमारे गम की गहराईयों से वो बेखबर चले गए

चटक गया दिल मेरा एक आईने की तरह
इसे जोड़ने वाले वो शीशागर चले गए

यूँ छोड़ देते हैं अब हम खत लिखकर
थे उनके काशिद कभी वो कबूतर चले गए

उनके शौके कत्ल की कभी दुनिया मुरीद थी
कहाँ वो कातिल, वो खंजर चले गए

महल थी हमारे लिए कभी वो टूटी इमारतें
मधुर मुलाकातों के वो खंडहर चले गए

जिन पर लगे इल्ज़ाम मुझ पर सितम ढाने के
कौनसी गलियों मे वो सितमगर चले गए

मौजे इश्क़ की लहर अब आती नहीं किनारे
न जाने कहाँ अब तो समंदर चले गए

शबे बेकशी है 'कर्म' नींद नहीं अब आँखों मे
हसीन ख्वाब दिखाने वाले वो बिस्तर चले गए।

3

सड़को पर न जाने कितने गरीब मजदूर मर गए
नसीब ना हुई मौत गाँव मे,घर से दूर मर गए

माँ बाप की जिम्मेदारी, कभी बच्चों की ख्वाहिशें
इस तले दबकर सपने सारे चकनाचूर मर गए

कोशिश तो बहुत की उन्होने अपनी मंजिल पाने की
गर्म रेत की तपिश मे भूखे प्यासे मजबूर मर गए

कतरा कतरा रोज मरे थे बच्चों की आँखों मे देखकर
मौत के सम र मे मगर आज भरपूर मर गए

एक नफरी के सिवा कुछ नहीं इन मजदूरों की
मौत किसी के राखी मर गए, किसी के सिंदूर मर गए

जो हमेशा गुमनाम रहे इस दुनिया की भीड़ मे
अखबारों के पेज पर आज होकर मशहूर मर गए

बहुत संगदिल है 'कर्म' ये सियासत का आईना
जिसने भी देखा इसके अंदर सब बेनूर मर गए।

4

दीपोत्सव है आज, जिंदगी सबकी रौशन हो
दीपों की जगमगाहट मे सबका मन प्रसन्न हो

हर लब पर सजे तबस्सुम की खिलखिलाहट
कहकहों से गूंजता हर घर हर आंगन हो

दुनिया को ज्ञान की रौशनी मेरा मुल्क दिखाए
तरक्की के रास्ते पर अग्रसर मेरा वतन हो

ये दीपक समेट लें सबके दुखों के अंधेरें
खुशियों से लबालब सबके चंचल मन हो

ये जश्न-ए-चिराग सबको मुबारक हो ''कर्म''
यहीं आरजू मेरी सबका सुखमय जीवन हो

मेरी सांसो की रवानी का अहसास है तू,
रूह-ए-जिन्दगी मेरी, बहुत खास है तू...

वजूद तेरा इस तरह मेरी हरकत-ए-दिल मे,
लगता है यही कही आसपास है तू...

कमी नही जहाँ में खूबसूरत चेहरों की,
लगता है मेरी मौहब्बत की तलाश है तू...

कितने सावन आए और आकर चले गए,
बुझी नही कभी वो मेरी प्यास है तू...

रौशन शमां प्यार की तेरे दिल मे भी है,
शायद इसलिए आज बदहवास है तू...

कभी तो रंगीन होंगी ये वीरान महफिलें,
मेरे उजड़े हुए दिल की आस है तू...

ये गुलशन गुलजार है तेरी यादों से,
चमन-ए-हयात का खिला हुआ पलाश है तू...

जीने की उम्मीद है कायम तुमसे ही 'कर्म'
मेरा यकीं है तू, मेरा विश्वास है तू...

5

मैं सपने बेच रहा हूँ पर खरीददार नहीं मिलता
दुकान सजाऊँ सपनो की वो बाजार नहीं मिलता

जिसको देखो वो खोया है सपनो की दुनिया मे
सपने हकीकत मे बदल दे ऐसा यार नहीं मिलता

बची नहीं दरो दीवार बस सपनो का घरौंदा है
सपनो की रखवाली करे वो पहरेदार नहीं मिलता

किस्से बहुत सुनाते हैं लोग सपनो की दुनिया के
जो सपनो को शक्ल दे वो किरदार नहीं मिलता

खबरें तो बहुत पढी हैं यारों हमने सपनो की
सपने सच कर दे ऐसा अखबार नहीं मिलता

सपने उनके देखे है हमने भी बहुत 'कर्म'
असल जिंदगी मे मगर उनका दीदार नहीं मिलता

6

अपने वतन को तू अपनी पहचान बना ले,
वतनपरस्ती को तू अपना इमान बना ले ।

बदन महके तेरा वतन की मिट्टी की खुशबू से,
इसके जर्रे जर्रे को तू अपनी शान बना ले ।

दौलत भी शौहरत भी तूझको इसने अता की,
फलक पर ले जा इसे अपना गुमान बना ले ।

कायम है वजूद तेरा इस वतन से ही ए दोस्त,
इसकी हर खुशी को अपनी मुस्कान बना ले ।

ये जरूरी तो नही कि तू फरिश्ता बने,
बस खुद को एक बेहतर इंसान बना ले ।

मुयस्सर नही जगह गद्दारों के लिए कब्र में,
लोगों के दिलों मे तू पक्का मकान बना ले ।

रश्क नही इश्क सिखातें हैं मज़हब यहाँ,
वतन को अपनी अरदास, अज़ान बना ले ।

मुकम्मल रख तू इसकी आबो हवा को,
सज़दे जमीं को कर खूबसूरत आसमान बना ले ।

स्व. कर्मबीर सिंह
उप आयुक्त

गणपति उत्सव एवं सत्यनारायण पूजा की झलकियाँ

अध्यक्ष सीबीआईसी के भ्रमण की झलकियाँ

महिला उद्यमी समारोह की झलकियाँ

हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ

सीमाशुल्क, मुंबई के अधिकारियों की खेल गतिविधियों की झलकियाँ

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2021- संक्षिप्त रिपोर्ट

सीमाशुल्क मुंबई, अंचल- I में हिंदी दिवस एवं पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन दिनांक २८.०९.२०२१ को किया गया। समापन समारोह में माननीय प्रधान आयुक्त सीमाशुल्क (सामान्य) श्री. सुनील जैन, आयुक्त सीमाशुल्क (आयात I एवं II) श्री. मनोज केडिया, आयुक्त सीमाशुल्क (निर्यात एवं लेखापरीक्षा) श्री. मनीष मणि तिवारी, अपर आयुक्त सीमाशुल्क (सामान्य) श्री. तारिक माबूद, अपर आयुक्त सीमाशुल्क (सामान्य) श्री. अजित दान एवं अन्य अधिकारी / कर्मचारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन सहायक आयुक्त श्री. संजय कुमार एस. बुन्देला द्वारा मनमोहक रूप से किया गया। श्री. संजय कुमार एस. बुन्देला ने स्वागत भाषण द्वारा सभी का अभिनंदन किया एवं हिंदी पखवाड़े के इतिहास के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जैसे हिंदी निबंध लेखन, टिप्पण एवं आलेख एवं राजभाषा / सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आदि। इन सभी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने अति उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर भाग लिया। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के दौरान विभिन्न प्रतीयोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

पुरस्कार वितरण के पश्चात, माननीय प्रधान आयुक्त सीमाशुल्क (सामान्य) श्री सुनील जैन, आयुक्त सीमाशुल्क (आयात I एवं II) श्री. मनोज केडिया, आयुक्त सीमाशुल्क (निर्यात एवं लेखापरीक्षा) श्री. मनीष मणि तिवारी ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए जो कि अत्यंत श्रवणीय एवं प्रेरक होने के साथ-साथ हिंदी के प्रयोग एवं उसके महत्व को प्रकाशित करने वाले थे। कार्यक्रम के दौरान आमंत्रित कवियों श्री. ज्ञान प्रकाश गर्ग (सेवानिवृत सहायक आयुक्त, सीमाशुल्क), एवं श्री. लक्ष्मण शर्मा 'वाहिद' जी ने अपनी हास्य कविताओं की पंक्तियों से सभागार में उपस्थित सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को मंत्र-मुग्ध किया एवं कई अधिकारियों / कर्मचारियों ने मधुर गीत प्रस्तुत किए और कविता पाठन किया एवं अपने अनुभवों को साझा करते हुए, हिंदी भाषा को और अधिक प्रबल बनाने पर बल दिया।

अंत में सीमाशुल्क मुंबई, अंचल-I में राजभाषा कार्यान्वयन के क्रम में हिंदी दिवस के सफल आयोजन हेतु सहायक आयुक्त (हिंदी अनुभाग), श्री. अनिल कुमार ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के पूर्ण योगदान / सहयोग के लिए हिंदी अनुभाग की ओर से आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुति

हिंदी अनुभाग

राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान (प्रथम पुरस्कृत निबंध)

नेल्सन मंडेला की एक कहावत में कहा है कि आज का युवा कल का नेता और राष्ट्र का भविष्य है। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार हमारी युवा पीढ़ी हमारे राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी है। यदि हमारा युवा शक्ति अगर सही मार्गदर्शन में कार्य करे तो कोई भी राष्ट्र, कुछ ही समय में फर्श से अर्श पर पहुँच सकता है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में युवाओं का एक विशेष योगदान होता है। उसकी सोचने समझने तथा कार्य करने की क्षमता अन्य से अधिक होती है। राष्ट्र के निर्माण में युवाओं का 20-30 % तक की भागीदार रहती है। जिस भी राष्ट्र में युवाओं की संख्या अधिक होती है। उस राष्ट्र के विकास की गति कभी धीमी नहीं हो सकती।

1) युवाओं का योगदान

युवा वह शक्ति है, वह तेज, वह वेग है, जिसका उपयोग यदि हम सही दिशा में करते है तो हम अपने राष्ट्र को किसी भी मुकाम तक पहुचा सकते हैं। एक उदाहरण के तौर पर हम जापान को ही ले लेते हैं। जापान में हिरोशिमा और नागाशाकी बम ब्लास्ट 1945 के बाद भी जापन ने हार नहीं मानी और अपनी युवा पीढ़ी की मद्द से लगभग 42 वर्षों में ही एक शक्तिशाली राष्ट्र के तौर पर तैयार हो गया ऐसा इसलिए हो पाया क्योंकि उस वक्त जापान की जनसंख्या का लगभग 50% युवा था और उसका सही दिशा में प्रयोग करके कम ही समय में अपने राष्ट्र को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में तैयार किया।

2) राष्ट्र निमार्ण में युवाओं की रचनात्मक पहल

राष्ट्र का निमार्ण किसी एक क्षेत्र के विकसित होने से नहीं निर्मित हो सकता, राष्ट्र के निर्माण में विभिन्न रचनात्मक पहलू होते हैं। जैसे - खेल, कुद, क्षेत्र, शिक्षा, विज्ञान, साहित्य, राजनीति, संस्कृति आदि राष्ट्र का निर्माण तभी सम्भव है जब तक हमारा युवा इन सभी क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान अतर्राष्ट्रीय स्तर पर नहीं बनायेगा जैसे उदाहरण के तौर पर विज्ञान के क्षेत्र में हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जिनको हम लोग मिसाइल मैन भी कहते हैं। आज वो हमारे युवा पीढ़ी के लिए प्रेरक तथा मार्गदर्शक हैं। राजनीति के क्षेत्र में हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जिन्होंने अपने देश ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में अपनी पहचान बनाई और वो अपनी युवा अवस्था में कितने बड़े और ऐतिहासिक घटनाओं को अनजाम दिया जिनको आज भी हम किताबों में पढ़ते हैं। ऐसे में ही खेलकूद क्षेत्र में, दारासिंह, सचिन तेंदुलकर जिनको क्रिकेट का भगवान माना जाता है। मेजर ध्यानचन्द हॉकी के भगवान कहे जाते हैं। ऐसी बहुत सी हस्तियाँ है

जो कि युवा पीढ़ी की प्रेरणा स्त्रोत है।

युवा वो समूह की धारा है जो किसी भी कठिन से कठिन कार्यों को बिना किसी कठिनाई के प्राप्त कर सकती है, लेकिन उसे किस दिशा में मोड़ा जाता है उसपर यह निर्भर करता है, अगर उस धारा को गलत दिशा में मोड़ दिया जाता है तो राष्ट्र के निमार्ण की जगह विनाश शुरु हो जायेगा।

महत्व

a) शिक्षा का विकास

युवा शक्ति को एक धार देने के लिए शिक्षा ही एक ऐसा हथियार है जिसका उपयोग करके युवा शक्ति को महाशक्ति में बदल सकते हैं। शिक्षा का युवाओं के विकास तथा राष्ट्र के निर्माण में एक विशेष योगदान है। पहले शिक्षा का अभाव होने के कारण युवा अपनी शक्ति का प्रयोग राष्ट्र के निमार्ण में करने में असमर्थ था किन्तु अभी के समय में शिक्षा का अधिकार अनुच्छेद 21 के तहत प्रदान किया गया है। जिससे कि आज हमारे अधिकतर युवा पढ़े-लिखे हैं। जिससे कि वह प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से अपने राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे रहे हैं।

b) विज्ञान का महत्व

शिक्षा के बाद विज्ञान तथा तकनीकी एक दूसरा हथियार है जिसका बहुत ही महत्वपुर्ण योगदान है किसी भी राष्ट्र के निर्माण में। विज्ञान की मद्द से हमारे युवा अपना समय के साथ-साथ बल भी बचा लेता है। एक उदाहरण के तौर पर पहले हमारे किसान बैलों की सहायता से खेतों में जुताई तथा बुआई करते थे जिससे समय के साथ-साथ बल भी अधिक लगता था तथा उत्पादन भी कम होता था आज भी वहीं पर हमारे किसान भाई नई-नई तकनीकी का प्रयोग करके जैसे - ट्रैक्टर आदि का प्रयोग करके समय के साथ बल भी बचा रहे हैं और उत्पादन भी अधिक हो रहा है। जैसा कि हम जानते हैं कि हमारा देश किसान प्रधान देश है और इसका हमारे राष्ट्र के निर्माण में विशेष योगदान है। जैसे चावल, दाल मसाले आदि हमारे देश से दूसरे देश को निर्यात किये जाता हैं जोकि अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र के निर्माण में योगदान प्रयान करता है।

c) साहित्य तथा संस्कृति का महत्व

साहित्य तथा संस्कृति किसी राष्ट्र की वह परिभाषा है जो कि उसके साथ हमेशा दिखाई पड़ती है। और उसी से उसकी पहचान होती है। यदि हमारे युवा अपनी संस्कृति का सही से उपयोग तथा

सही दिशा में करें तो वह अपने राष्ट्र के निमार्ण में एक विशेष योगदान दे सकती है, क्योंकि जब आप की संस्कृति कि पहचान एक विश्व स्तर पर होगी तो पूरे विश्व से विभिन्न जगह से पर्यटक आयेंगे जिससे हमारे देश की आर्थिक स्थिति मे सुधार होगा और पर्यटन को बढ़ावा प्राप्त होगा ।

d) निष्कर्ष

युवाओं का राष्ट्र के निमार्ण में एक विशेष योगदान है । यह वह रीढ़ की हड्डी है जिसके खराब होने से राष्ट्र के निमार्ण में ही विनाश होने लगता है । युवा शक्ति को सही दिशा में कार्य करने के लिए प्ररित करते हुऐ हमारे, प्रेरणा स्त्रोत डॉ. ए. पी. जी. अब्दुल कलाम, महात्मा गांधी, नेहरू जी आदि के विचारों का अनुसरण करते हुए प्ररित होना चाहिए ।

'' युवा ठान ले जो भी काम ।
हो जाये करना आसान ।। ''
'' युवा बदलेगा तभी राष्ट्र बदलेगा ''
'' हर युवा ने यह ठाना है कि
राष्ट्र निमार्ण में योगदान देना है । ''

सच्चिदानंद पाण्डेय
कर सहायक

राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान (द्वितीय पुरस्कृत निबंध)

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में सामाजिक समरसता राजनैतिक स्थिरता तथा इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास अहम है। इन सब का विकास राष्ट्र के नागरिकों के हाथ में होता है। जैसा कि श्री. नेल्सन मंडेला जी ने कहा है ''आज के युवा ही कल के नेता है''। देश के युवा ही हैं जिनके कंधे पर ये जिम्मेदारी होती है। हमारे देश भारत के परिप्रेक्ष्य में ये बात काफी सही प्रतीत होती है। क्योंकि हमारे देश में लगभग 50 % आबादी 25 वर्ष से कम आयु वर्ग तथा 65% आबादी 35 वर्ष से कम आयु वर्ग में है।

देश के आर्थिक विकास की बात हो या राजनैतिक या सामाजिक हर एक दृष्टिकोण से युवा वर्ग की महत्वपूर्ण भागीदारी को नकारा नहीं जा सकता है। देश का युवा वर्ग नए तकनीक से लदा होता है जिसका उपयोग न सिर्फ अपने फायदे बल्कि पूरे समाज के हित मे कर सकता है। इस बात के बहुत सारे साक्ष्य हमारे सामने हैं कि युवाओं ने किस तरह नए-नए तकनीक का उपयोग करके राष्ट्र की आर्थिक उन्नति में भरपूर सहयोग किया है। उदाहरणस्वरुप फ्लिपकार्ड, अर्बन क्लैप, जिरोधा तथा जोमैटो नामक सुप्रसिध्द कंपनियों को युवाओं ने नई-नई तकनीक का इस्तेमाल करके बनाया। इन कंपनियों ने लाखों लोगों को रोजगार दिया जो अंततः देश के आर्थिक विकास में भागीदार बने।

राष्ट्र निमार्ण के प्रमुख तत्वों में एक राजनीतिक स्थिरता भी है। हमारा देश युवाओं का देश माना जाता है। इस कारण से, युवाओं का योगदान भी अप्रतिम है। आज हमारे देश में युवाओं का राजनीति में प्रवेश दृष्टिगोचर हो रहा है। युवाओं में रचनात्मक कौशलता के साथ अपने लक्ष्य को पाने का जो जुनून होता है उसके कारण राजनीति में उनका बहुत योगदान हो सकता है। श्री. नेल्सन मंडेला जी के कथनानुसार जब देश का युवा नेता बनता है तो अपने कार्यक्षमता तथा नए-नए प्रयोग से जनहित से जुड़ें बहुत से मुद्दों पर अडिग होकर कार्य करता है। भले ही ज्यादा कार्यानुभव न हो लेकिन अपने सृजनशीलता से नए-नए तरीके इजाद करके जनमानस को उनकी समस्याओं से मुक्त करता है। आज हमारे देश में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ युवाओं ने न सिर्फ राजनीति में सक्रियता दिखाई है, बल्कि समयानुसार अनेक जनहित के कार्यों को बेहद कुशलता से अंजाम दिया हैं।

जहाँ तक निर्माण के दुसरे तत्व यथा सामाजिक समरसता की बात आती है हमारे देश के युवा ने इसमें भी सेशक्तत भागीदारी दिखायी है। चूँकि युवा आधुनिक तकनीक से युक्त होता है, उसके पास देश विदेश की बहुत सारी जानकारी सुगमता से उपलब्ध होती है। वह अपने आस पास की बहुत सारी क्रियाकलापों, सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं अथवा समाज में हो रही अलग - अलग घटनाओं को अलग दृष्टिकोण से देखता है, उनको अपने तरीके से सही और गलत के पैमाने पर परखता है, तत्पश्चात् निर्णय लेता है और अगर कुछ अटपटा लगे तो उसपर आवाज उठाने से हिचकता नहीं। ऐसी बहुत सारी बातें दैनिक रुप से अलग-अलग माध्यम से जानकारी में आती हैं जहाँ युवाओं ने अपने सक्रिय भागीदारी से भ्रष्टाचार, सामाजिक कुरीतिओं या अपने प्रति हो रहे, भेदभाव के खिलाफ आवाज उठायी है। आखिरकार ये बातें समाज को बेहतर दिशा में ले जाती हैं।

युवाओं की देश के छवि निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। देश का युवा जितना जागरुक होगा, उतना ही इसके कार्यों से देश की छवि में सुधार होगा। आज हमारे देश के युवाओं ने अलग-अलग क्षेत्रों में अपने कौशल का प्रदर्शन पूरे वैश्विक पटल पर किया है। अभी हाल ही में हुए ओलंपिक खेलों में देश के युवाओं ने अपने बेहतर प्रदर्शन से देशवासियों का सर गर्व से ऊँचा कर दिया है। साथ ही साथ पूरे विश्व में अपने देश का गौरव बढ़ाया है। चाहे वह नीरज चौपडा हो या बजरंग पूनिया या साक्षी मलिक इन

सब ने अपने प्रदर्शन से ना सिर्फ देश की छवि बनाने का काम किया है, अपितु देश के बच्चों को प्रोत्साहित भी किया है। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या विज्ञान देश का युवा सब क्षेत्रों में अपनी भागीदारी से राष्ट्र निर्माण में सहायक होते हैं।

युवाओं का राष्ट्र निर्माण में योगदान अनवरत जारी रहे इसके लिए जरूरी है कि उनकी समस्याओं का आकलन करना और उनके निराकरण के बेहतर उपाय करना। जहाँ तक हमारे देश भारत के युवाओं की समस्याओं की बात है, उनमें से प्रमुख है शिक्षा का अभाव बेरोजगारी तथा अकुशल मार्गदर्शन। अभी हाल के शैक्षिक आंकड़ें परिलक्षित करते हैं कि हमारे देश के लगभग 20-30 % युवा अभी भी अशिक्षित हैं। और जहाँ तक कुछ स्वतंत्र एजेंसियों के आकलन की बात की जाए, शिक्षित युवाओं का एक बड़ा हिस्सा कौशल के मामले में बहुत कम निपुण है। बेरोजगारी की बात हमारे देश में अभी भी एक अभिशाप है। युवाओं का एक बहुत बड़ा तबका एक अच्छे जीवन यापन की स्थिति में नहीं है। इन सब का प्रभाव आने वाली पीढ़ियों पर पड़ने की आशंका को नकारा नहीं जा सकता। सही रोजगार के अभाव में युवा का सही मार्ग से भटकने की संभावना भी बनी रहती है। मजबूरी में इन युवाओं का गलत तरीके से इस्तेमाल भी किया जा सकता है। ऐसे बहुत से मामले प्रकाश में आते रहते हैं जहाँ शिक्षा तथा रोजगार के अभाव में युवा गलत राह पर चले गए। यदाकदा राजनीतिक पार्टियाँ भी इनकी मजबुरी का फायदा उठाने से नहीं चुकतीं।

युवाओं की समस्याओं का निराकरण सरकार के लिए भी एक बड़ी चुनौती है, पर हमारे देश की सरकार ने भी अलग-अलग योजनाओं के माध्यम से निराकरण करने की कोशिश में लगी है। हालाँकि इस दिशा में और भी प्रयास अपेक्षित हैं पर जो सरकार ने कदम उठाये हैं उनकी सराहना भी जरूरी है।

कोई भी राष्ट्र बिना अपने नागरिकों खासकर युवाओं की भागीदारी के बिना समृध्द नहीं हो सकता। जहाँ एक ओर सरकार को विभिन्न क्षेत्रों में इनकी भागीदारी सुनिश्चित करनें के प्रयास निरंतर करना चाहिए वही युवाओं को भी अपने योग्यता में निरंतर वृध्दि करके अपने कौशल विकास से न सिर्फ अपना विकास अपितु राष्ट्र के विकास में भी भागीदारी सुदृढ़ करना चाहिए। हमें अपने युवाओं के प्रति विश्वास का भाव व्यक्त करना भी जरूरी है ताकि वो अपने नए प्रयोगों के जरिए नई - नई उपलब्धिओं को पा सकें और देश को एक नई ऊँचाई पर ले जा सकें।

धर्मेन्द्र कुमार धनेश
अधीक्षक

''मेरा प्रिय पुस्तक'' (तृतीय पुरस्कृत निबंध)

विद्यार्थी जीवन से लगाव, मुंबई कस्टम्स विभाग में कार्यरत होने तक मैंने जीवन की विधाओं पर अनेक पुस्तकें पढ़ीं । कुछ जीवन दर्शन पर, बहुतेरे साहित्य पर अनेकों कहानियाँ और उपन्यास, इतिहास, राजनीति और धर्म - दर्शन पर सभी पुस्तकों से अपने - अपने ढ़ंग से मेरे मन को मेरी सोच को छुआ और अपनी छाप छोड़ी पर एक पुस्तक जिसे मैंने अपने स्नातक काल के दौरान पढ़ा वह तो मेरे मन पर ऐसे छप गई कि मानो मेरा जीवन उस पुस्तक के इर्द-गिर्द घूम रहा हो । यह एक विदेशी भाषा की पुस्तक थी जिसका अंग्रेजी भाषा में अनुवादित प्रकाशन मैंने पढ़ा । पुस्तक का नाम है "THE ALCHEMIST" ''द अलकेमिस्ट'' और इसके लेखक हैं Paule Cohelho जो कि स्पेनिश भाषा के लेखक हैं। इस किताब ने मुझे ऐसा प्रभावित किया कि इसे मैंने अपने सभी नजदीकी मित्रों और रिश्तेदारों को भी पढ़ने को प्रेरित किया और अविश्वसनीय रुप से इस पुस्तक ने उन सभी को प्रभावित किया ।

यह पुस्तक जीवन के जिस पहलू को प्रभावित करती है, वह है ''अपने जीवन - उद्देश्य को प्राप्त करने की ललक'' । पुस्तक एक Fictional कृति है, जो एक सामान्य चरवाहे युवक की सामान्य दिनचर्या से शुरु होकर उसके सपने को पाने की राह में आगे बढ़ने और रास्ते की रुकावटों से पार पाने की कहानी कहती है ।

सेन डिएगो एक भेड़ चरवाहा है जिसके माता - पिता गरीब हैं, और चाहते हैं कि उसका बेटा चर्च का पादरी बन कर अच्छी जिंदगी जिए । पर सेन डिएगो को विश्वभ्रमण का जुनून सवार है और अपने माता - पिता के उस प्रश्न का कि चरवाहा बनकर तुम विश्व कैसे घूमोगे का जवाब था कि अगर सपना पूरा होता है तो चरवाह बनना ही पसंद करुंगा । सेन डिएगो अपनी भेड़ों के साथ अपनी जिन्दगी में खुश है और नई-नई जगहे घूम रहा होता है । एक रात उसे सपना आता है कि मिस्त्र के पिरामिड में खजाना गड़ा है जो कठिन रेगिस्तानी रास्तों से होकर जाता है। यह सपना उसे एक खण्डहर हो चुकी चर्च में सोते समय आता है जिसे वह दुबारा उसी जगह सोते समय देखता है । वह एक जिप्सी महिला के पास जाता है अपने सपने का अर्थ जानने के लिए जिप्सी महिला बताती है कि उसे अपने सपने को पुरा करने के लिए मिस्त्र के रेगिस्तान से होते हुए पिरामिडों तक पहुँचना पड़ेगा और निश्चित ही वहाँ गड़ा खजाना उसे मिलेगा । जिप्सी महिला उससे खजाने का दस प्रतिशत अपनी फीस के बतौर मांग लेती है ।

अब कहानी शुरु होती है, चरवाहे की यात्रा की । सबसे पहले वह अपने सपने पर और भरोसा करना चाहता है । उसे एक वृध्द आदमी मिलता है जो उसे बताता है कि जब-जब तुम अपने सपने को लेकर संशय में पड़ोगे तब-तब एक विचार ध्यान में लाना है कि अगर तुम अपने सपने को पूरे दिल से पाना चाहो तो पूरी कायनात आपके लिए सहायता में लगती है ।''

चरवाह अपनी भेड़ें बेचकर, पैसे लेकर आगे बढता है, कि उसके पैसे चोरी हो जाते हैं । वह बिल्कुल बेसहारा हो जाता है । लेकिन ईश्वरीय संकेतों के सहारे आगे बढ़ता है । एक वीराना पहाड़ी पर क्रॉकरी की दुकान पर काम करता है और अप्रत्याशित रुप से अपनी अंतरआत्मा की आवाज सुन एक साल मं उस दुकान से अपनी यात्रा का खर्चा जुटा लेता है । एक कारवा में शामिल होकर आगे बढ़ता है और कबीलाई युध्दों से खुद को बचाता हुआ एक अलकेमिस्ट को मिलता है । अलकेमिस्ट उसे मिट्टी से सोना बनाना सिखाता है । साथ ही साथ उसे सावधान करता है कि उसका अन्तिम उद्देश्य अपने सपने को ही पाना है । चरवाहा उसे गुरु मानता है और रेगिस्तान मे जीवन के संकेतों और ईश्वरीय संदेशों का

अनुसरण करता हुआ अंततः मिस्त्र के पिरामिडों में पहुँच जाता है।

वहां सपने में देखे हुए जगह पर खुदाई कर रहा होता है कि कबीलाई लोगों द्वारा पकड़ लिया जाता है और पीटा जाता है। उसके सामान को लूट लिया जाता है। उसे लगा उसका अंतिम समय आ गया और वह उनसे बोलता है कि मैं यहाँ स्पेन से चलकर खजाना लेके जाने आया हूँ। यह सुनकर कबीले का सरदार उसका मजाक उडाकर बोलता है कि मुझे भी सपना आया था कि स्पेन के टूटे चर्च में खजाना गड़ा है।

चरवाहे को अब अपने उपर हंसी आ गई जिस जगह से चलकर वह आया उसका खजाना तो वही पर है। वह वापस जाता है, अपने उस चर्च में जहाँ उसने कितनी ही रातें सोकर बिताई थीं और खजाना पा लेता हैं।

इस पुस्तक में यह भावार्थ बार-बार परिक्षित होता है कि हमारे सपने हमारे पास हमारे अन्तरमन में ही छिपे हैं। बस उन्हे पाने के लिए हमे कई कठिन परिस्थितियों और परीक्षाओं से गुजर कर, खुद को साबित करना होता है। यही कृति हमारे सपनों को पूरा करती है। मानव जिजिविषा का बखूबी व्याख्यान करती यह पुस्तक आज भी मेरी प्रिय पुस्तक है और इसे मैं हर साल किसी न किसी को उपहार में देता रहता हूँ।

हम सब अपनी इस यात्रा में हैं जो हमें अपने सपनों को पाने तक करनी है। अनेकों परीक्षायें देनी हैं और उनको पार कर अपना उद्देश्य पाना है। यह भी सम्भव है कि हमें मार्ग से विचलन की अनेक परिस्थितियां मिलें। पर कोई न कोई ईश्वरीय संदेश हमें मिलेंगे जो हमें हमारे सपने और उद्देश की प्राप्ति में सहायक बनेंगे। क्योकि "if you want to achieve something the entire universe campfires in helping you to achieve the same."

जीवन को नकारात्मकता से उभार कर सकारात्मकता का विचार करने वाली यह पुस्तक विश्व की अनेकों भाषाओं में अनूदित हुई और आज बेस्ट सेलर की श्रेणी में है। जीवनदर्शन को एक आम व्यक्ति की कहानी से समझाने वाली यह पुस्तक मेरी ही नहीं, अनेकों लोगों की प्रिय है। हो भी क्यों न, संघर्ष से लड़ना जो सिखाती है।

आदित्य सिंह
कर सहायक

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़े के
समापन समारोह की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़े के
समापन समारोह की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़े मे आमंत्रित कवियों एवं विजेताओं को सम्मानित / पुरस्कृत करने की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़े मे विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करने की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़े मे विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करने की झलकियाँ

कविता

वफा से दामन बचाये क्योंकर
गमो से पीछा छुडाये क्योंकर

सबब है । शायद हिफाजतों का
मका से जाले हटाये क्योंकर

गुनाह जब हद से बढ़ गये हैं ।
यहाँ पे परसें घटायें क्योंकर

लहू में जिनके मुताफकत हैं ।
तो हाथ उनके मिलायें क्योंकर

हमें मोहब्बत हैं । तुमसे कितनी
हम अपने मूंह से बताये क्योंकर

अभी हैं । माहौल नफरतों का
खुशी के नगमें सुनाये क्योंकर

कोई खरीदें तो बिक भी जायें
हम अपनी कीमत लगाये क्योंकर

मुकेश कोशिश हैं । सिर्फ इतनी
ये देश जन्नत बनाये क्योंकर

मुकेश मिश्रा
सीमाशुल्क अधीक्षक

चंद लम्हे

वो चंद लम्हें जो हमने साथ गुजारें थे ।
जिंदगी के वो कितने हसीन नजारें थे ।
पाता हूँ तुम्हे हकीकत समझ कर ख्वाबों में ।
खुलती हैं । आंख तो टूटते हुए सितारें थे ।
हर शौ पर उभरता हैं । अक्स तुम्हारा बार-बार ।
वो बहा था मेरी आंखों के वो आँसू नहीं अंगारें थे ।
देता हूँ खूद को झूठी तसल्ली अब ये कहकर ।
जाने दे 'अख्तर' हम भी कभी उनके बहुत प्यारे थे ।।

पि. दि. विजयम
सहायक आयुक्त (निर्यात)

अनमोल वक्त

हर क्षण एक सुबह आती हैं,
हर प्रकाश की किरण के साथ,
हर पल एक सवेरा आता हैं,
हर एक निराशा करे बाद,
हर क्षण एक संदेश हैं,
हर पल एक सीख्र हैं ।
हर क्षण एक नयी ज़िंदगी हैं,
हर पल एक मृत्यु हैं ।
हर क्षण एक आशा हैं,
हर पल एक निराशा हैं ।
प्रेम को पिरोएँ रख्रना हैं,
नीलम को जगमगाये रख्रना हैं ।

प्रेम प्रकाश मीना
कनिष्ठ अनुवादक (निर्यात)

पापा की खुशी

कमरे से चीखे आना क्या कम हुई,
कई लोगों की आँखे नम हुई
तपारु से बाहर आई, और बोली - मुबारक हो
आपको बच्चा हुआ है मैं सुनकर फुला ना समाया
मेरा दिल क्या करु क्या न करु
नवजात को देखू ? या मोहल्ले में हल्ला करु ?
सुन किलकारी मोहल्ले वालों कों मैं टोक नहीं पाया
अंदर जाने से मैं खुद को रोक नहीं पाया
नन्हे नन्हे हाथ उसके मेरी तरफ लपक रहे थें
मासुम चेहरा, मनमोहक मुस्कान देखकर
मेरी आँखों से आसुओं का सैलाब आया था
ये सोचकर, कि मेरा पापा भी कितना खुश हुआ होगा
जब में इस संसार मे आया था
बिस्तर पर पड़ी पत्नी मेरी वीरांगना सी मुस्काई भी
जैसे हजारों मोहाओं को वो अकेले मात दे के आई थी
जैसे उसमें मेरी माँ का अक्ष नजर आया
मेरे बच्चे में मैं और मुझमें पापा सा सख्श नजर आया
वो मेरा और मैं आपका गुल - ए - गुलजार हूँ
मम्मी! पापा!, मैं आप दोनों का शुक्रगुजार हू

सोमवीर
कर सहायक

'' होली ''

होली का रंग बिरंगा त्यौहार
सबके जीवन में इस बार
कर दे खुशियों की ऐसी बौछार
हर तरफ हो बस प्यार ही प्यार
गमों की अब ना बहे बयार
एक दूजे की मद्द को सभी रहें तैयार
नवयौवन सा सदा बना रहे खुमार
प्रेम रुपी वर्षा की सदा बरसती रहे फुहार
इंसा में ही रब का सदा होता रहे दीदार
होली का रंग बिरंगा त्यौहार
सबके जीवन में इस बार
कर दे खुशियों की ऐसी बौछार
हर तरफ हो बस प्यार ही प्यार

संजय कुमार एस. बुन्देला
सहायक आयुक्त, आयात - I

'' दिल की आवाज ''

बहुत रो चुकीं तुम्हारी याद में ये आँखे
लेकिन अब ये नही रोतीं,
रोता है तो सिर्फ दिल
तड़पता है तो सिर्फ दिल
दिल जिसका रोना कोई सुन नहीं सकता
दिल जिसका तड़पना कोई समझ नही सकता,
सुन सकता है तो सिर्फ वह
समझ सकता है तो सिर्फ वह
जिसके खुद के पास भी हो एक दिल
काश तुम्हारे सीने में भी
कहीं किसी कोने में होता
नन्हा सा, प्यारा सा,
दिल की आवाज सुनने वाला
एक छोटा सा दिल,
एक छोटा सा दिल,

संजय कुमार एस. बुन्देला
सहायक आयुक्त, आयात - I

'' हमारे अन्नदाता ''

आमतौर पर अन्नदाता से आशय किसान से होता है लेकिन मैं यहाँ बात कर रहा हूँ सीमाशुल्क मुंबई अंचल - I के अन्नदाता की यानि हमारी अपनी कैंटीन की।

जब कोई दूर से स्थानांत्रित होकर आता है तो उसकी सबसे बड़ी समस्या होती है अच्छा व स्वास्थपद भोजन मिलना विशेषकर उन परस्थितियों में जब अधिकारी अपने परिवार से दूर मुंबई शहर में अकेला हो।

हमारा कैंटीन स्टॉफ जिस तरह से नाम मात्र के शुल्क पर स्वादिष्ट एवं स्वास्थ्यप्रद घर जैसा भोजन उपलब्ध रहा है वो निश्चित रूप से काबिले तारिफ हैं। जब कोई गृहिणी रसोई में भोजन तैयार करती है तो उसके मन में ये भाव होता है कि मैं ये जो भोजन तैयार कर रही हूँ वो मेरे अपनों के लिए है ठीक उसी तरह हमारा कैंटीन स्टॉफ चूँकि कॉन्ट्रैक्ट पर ना होकर हमारे ही स्टॉफ के सदस्य हैं अतः उनके मन में भी एक गृहिणी की तरह ये भाव रहता होगा कि हम जो भोजन तैयार कर रहे हैं वो हमारे अपने लोगों के लिए है, उनके अपनेपन की इस भावना से ही भोजन और अधिक स्वादिष्ट हो जाता हैं।

जब कोई बच्चा पहली बार घर से दूर मुंबई नौकरी के लिए आता है, तो उसकी माँ की सबसे अहम चिंता बच्चे को मिलने वाले भोजन को लेकर रहती है, लेकिन जब वही बच्चा माँ से बातचीत में कहता है कि माँ तुम मेरे खाने की चिन्ता मत करो मेरी कैंटीन में मिलने वाला भोजन बिल्कुल घर जैसा ही है, यह सुनकर उस माँ को मिलने वाले संतोष की कल्पना ही की जा सकती है।

घर की रसोई में बनने वाले स्वादिष्ट भोजन का जितना श्रेय उस घर की गृहणी को जाता है उतना ही श्रेय उस घर के मुखिया को भी जाता है, क्योंकि वही रसोई और उसकी जरूरतों का ख्याल रखता है। हमारे सीमाशुल्क मुंबई अंचल - I के मुखिया प्रधान आयुक्त महोदय आदरणीय श्री. प्रमोद अग्रवाल सर हमारी रसोई का एक परिवार के मुखिया की तरह ही ध्यान रखते हैं, इस बात का मैं यहाँ इसलिए उल्लेख कर रहा हूँ क्योंकि मैंने स्वंय कैंटीन में भोजन के दौरान उन्हे यहाँ कि व्यवस्थाओं का अवलोकन करके जरूरी निर्देश देते हुए देखा है, यदि सिर्फ औपचारिकता वश ऐसा करना होता तो उन्हें स्वयं यहाँ आने की जरूरत नहीं पड़ती, बल्कि किसी भी अधिकारी के माध्यम से वे जानकारी ले सकते थे लेकिन उनका स्वयं कैंटीन की व्यवस्थाओं में रुचि लेना इस बात का प्रमाण है कि वे परिवार के मुखिया के रूप में यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि परिवार के सदस्यों को अच्छा भोजन स्वास्थप्रद परिस्थिततियों में उपलब्ध होता रहे।

अच्छा स्वास्थप्रद भोजन उपलब्ध कराने के लिए प्रधान आयुक्त महोदय एवं कैंटीन की व्यवस्थाओं से जुड़ें सभी अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं, साथ ही कैंटीन स्टॉफ का विशेष साधूवाद जिसमें रसोई तैयार करने से लेकर साफ-सफाई का ध्यान रखने वाले सभी कर्मचारी शामिल हैं। हम सभी का भी यह कर्तव्य है कि हम कैंटीन को अपने घर की रसोई समझकर उसे स्वच्छ रखने में अपना योगदान दे और हाँ थाली में अन्न की बर्बादी ना करें। इस लेख के माध्यम से कैंटीन स्टॉफ की भी जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वे भोजन के स्वाद व गुणवत्ता को बनाये रखें।

संजय कुमार एस. बुन्देला
सहायक आयुक्त, आयात - I

पितृ - ऋण

वो पत्नी की चिंता
के सपने बच्चे का
जो पाले है पापा ने
भविष्य बच्चे का

वो बच्चे की किलकारी
वो बच्चे का सिसकना
वो रात - रात भर बच्चे का चहकना
वो डाइपर का बदलना

सब कहते हैं माँ की है मेहनत
तो पिता का क्या है
दूध माँ का है
तो खून जलाया है पिता ने

बचपन में चलना सिखाया तो
गिरने पर हाथ बढ़ाया पिता ने
गिर के संभलना और संभल के है बढ़ना
ये भी सिखाया पिता ने

माँ को है चिंता सेहत की
तो पढ़ाया पिता ने
गुरु ने है राह दिखाया
तो गुरुकुल पहुँचाया पिता ने

है मित्रों की सोहबत
पर दुश्मनी सिखा भी दिया मित्रों ने
शाबाशी मिली तो पीठ सबने थपथपाया
पग जब भी है काँपे
पिता ने गिरने से बचाया

आदतें सीखी हैं माँ से
पर अक्स पिता का
डॉट जब भी है खाया
माँ का आँचल भिगोया
पर पिता के आँसूओ को
कौन देखपाया ?

पिता ने जब भी है डाँटा
माता ने बचाया
पर माँ के डाँटने पर
पिता को मौन ही रहना पाया

समय की तरकश ने
बच्चे को लड़कपन तक पहुँचाया
वहाँ भी माँ और दोनों को अपनाया
पौधे को पेड़ बनता देख
पिता फूला न समाया

समय की महत्ता को देख
बच्चे को कॉलेज तक पहुँचाया
नए मित्रों की मोहबत के लिए
माता-पिता से समय चुराया
खाने की मेज पर भी न पहुँच पाया

पैसों की है दिक्कत तो माँ को जताया
पर पिता से माँगने की न हिम्मत जुटाया
पढ़ाई और दोस्तों के लिए
माँ-बाप से नजरें चुराया

बढ़ती दूरियाँ देख, माँ ने आपत्ति जताया
पर नए सोच की दास्ता दें
बच्चे ने अपनी बातें छुपाया
पिता से बात करने के लिए
कम है समय बताया

क्या पिता की जीविका ही
बच्चे की खुराक हो
जीवन पक्ष पर माँ - बाप ही
आगे बढ़ने की सीढ़ी मात्र हो
उत्कर्ष पर पहुँचने के लिए
माँ की गोद और पिता दायित्व मात्र है
जीवन चक्र के संघर्ष में माँ एक
जीवनदायिनी और पिता पालनहार हो ।
माँ की है ममता तो पिता अश्रुमात्र हो
क्या माँ ने है दुध से सींचा, तो पिता ने भी
खून और अरमानों का दिया है बलिदान
दुनिया ने रखा है याद माँ को कृत्यों को तो
पिता के बलिदान का भी एक अक्षयपात्र हो ।

शिशिर सौरभ
मुल्य निरुपक

सतर्कता जागरुकता सप्ताह की झलकियाँ

सतर्कता जागरूकता सप्ताह में पुरस्कार वितरण की झलकियाँ

वित्तमंत्री महोदया के भ्रमण की झलकियाँ

सीमाशुल्क आयुक्तालय अंचल -I

में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

सीमा शुल्क आयुक्तालय अंचल –I

नवीन सीमा शुल्क भवन, बैलार्ड पियर, मुंबई – ४०० ००१.

Commissionerate of Customs Zone - I

New Customs House, Ballard Pier, Mumbai - 400 001.